भोजपुरी मूल क्रियाओं का रूपवैविध्य : एक अध्ययन
(A Study Of Morph Variation Of The Bhojpuri Main Verbs)

एम. फिल. हिंदी(भाषा प्रौद्योगिकी) उपाधि हेतु

लघु शोध-प्रबंध

सत्र : 2014-15

शोधार्थी

पंकज कुमार मिश्र

एम.फिल.हिंदी (भाषा प्रौद्योगिकी)

नामांकन संख्या- 2014/01/206/005

भाषा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय,वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1996 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित)

गांधी हिल्स, वर्धा-442005 (महाराष्ट्र) भारत

दूरभाष : 07152-251170, वेबसाइट: www.hindivishwa.org

भूमिका

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, समाज में रहने एवं दैनिक क्रिया-कलापों को पूरा करने के लिए 'भाषा' का प्रयोग करता है। भाषा ही वह वस्तु है, जिसके कारण सजीव प्राणियों में मानव सबसे श्रेष्ठ माना गया है। मानव अपने जीवन की प्रत्येक आवश्यकताओं एवं इच्छाओं को भाषिक अभिव्यक्ति के द्वारा व्यक्त करता है। भारत एक बहु-भाषी देश है, जहाँ अनेक भाषाएँ हैं, और साथ ही इनकी अनेक विभाषाएँ हैं। हिंदी भाषा की अनेक बोलियाँ हैं जिनमें भोजपुरी भी एक बोली है। भाषावैज्ञानिक दृष्टिकोण से भोजपुरी का भी एक भाषा के रूप में अध्ययन किया जाना चाहिए।

हर भाषा की अपनी एक व्याकरणिक व्यवस्था होती है, जिसके कारण हर एक भाषा दूसरी भाषा से भिन्न होती है। किसी भाषा की शाब्दिक व्यवस्था को देखा जाए, तो शब्द के अनेक भेद होते हैं और उन शब्द- भेद के आधार पर निम्न वर्गीकरण होते हैं जैसे- 'संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रियाविशेषण, क्रिया, अव्यय, निपात आदि।' इन शब्द-भेदों में हर एक की अपनी एक स्वतंत्र सत्ता होती है, इनका किसी भाषा के भाषिक संरचना में महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार भोजपुरी भाषा की भी अपनी व्याकरणिक व्यवस्था है, जिसके द्वारा सभी घटक व्याकरणिक व्यवस्था में बंधे होते हैं। चूँकि भोजपुरी हिंदी भाषा की एक बोली है इसलिए यह हिंदी के बहुत नजदीक है। लेकिन जब भोजपुरी की आतंरिक संरचना का विश्लेषण किया जाता है, तो कई तरह की विभिन्नताएं मिलती हैं।

भोजपुरी में भी सम्प्रेषण और संरचना की दृष्टि से 'वाक्य' एक आधारभूत इकाई है। भोजपुरी वाक्यों में 'क्रिया पदबंध' का प्रमुख स्थान है जो पूरे वाक्य को प्रभावित करता है। चूँकि उक्त लघु-शोध प्रबंध 'क्रिया के रूप वैविध्य' पर आधारित है, इसलिए यहाँ भोजपुरी के क्रिया रूप पर विचार किया गया है। भोजपुरी के क्रिया की अपनी एक व्यवस्था है, जिसके मुख्यत: दो भेद होते हैं - **(1) मूल क्रिया (2) सहायक क्रिया।** क्रिया संरचना में **'मूल क्रिया'** कोशीय अर्थ वहन करती है तथा उसके साथ जुड़कर आने वाली **'सहायक क्रिया'** व्याकरणिक अर्थ की सूचना देती है।

किसी भी भाषा में 'क्रिया' के सामान्य रूप के साथ-साथ अनेक कई 'क्रिया रूप' प्राप्त होते हैं। क्रिया की यह रूप वैविध्य प्रक्रिया कैसे निष्पन्न होती है, यह देखना आवश्यक हो जाता है। जिसका विस्तृत वर्गीकरण एवं विश्लेषण इस लघु-शोध प्रबंध का प्रमुख भाग है।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध **"भोजपुरी मूल क्रियाओं का रूप वैविध्य : एक अध्ययन"** विषय इसी क्रम में एक प्रयास है, जिसके अंतर्गत मूल क्रियाओं के उन्हीं रूपों का विवरण दिया गया है जो दैनिक जीवन में प्रयुक्त होती हैं।

जिसका अध्यायवार विवरण निम्नलिखित है-

प्रथम अध्याय के अंतर्गत 'भोजपुरी भाषा का परिचय' के बारे में बताया गया है। क्षेत्रीय विस्तार के अंतर्गत भोजपुरी भाषा मुख्यतः **बिहार** राज्य के 'चंपारण, रोहतास, भोजपुर, बक्सर, कैमूर' **उत्तर प्रदेश** के 'गाजीपुर, बलिया, वाराणसी, मिर्जापुर, जौनपुर, आजमगढ़, गोरखपुर, देवरिया और बस्ती' क्षेत्र में बोली जाती है। साहित्यिक पृष्ठभूमि के अंतर्गत भोजपुरी भाषा के साहित्यिक अवदान की अवधि को भी बताया गया है, तथा उसकी व्याकरणिक संरचना आदि के बारे में चर्चा की गई है।

वहीं **द्वितीय अध्याय** के अंतर्गत 'क्रिया : स्वरूप-विवेचन महत्त्व और वर्गीकरण' की बात की गई है। इसके तहत 'क्रिया' का महत्व एवं वाक्य में क्रिया की क्या उपयोगिता है? इसको संक्षेप में बताने की चेष्टा की गई है।

तृतीय अध्याय में "भोजपुरी मूल क्रिया का रूप वैविध्य" पर चर्चा की गई है, जो इस लघु शोध-प्रबंध का केंद्रिक विषय है, उसको विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है।

साहित्य पुनरवलोकन-

इस शोध-कार्य को संपन्न करने में विभिन्न सहायक-सामग्री की सहायता ली गई है, जिनमें हिंदी और भोजपुरी की पुस्तकों का पुनरवलोकन किया गया है, जिसका विस्तृत विवरण इस प्रकार है-

- **हिंदी में उपलब्ध पुस्तकों का वर्णन**

1- गुरु, कामताप्रसाद. (2009). हिंदी व्याकरण. इलाहाबाद. लोकभारती प्रकाशन.

इस पुस्तक में कामताप्रसाद गुरु ने काल को पूर्णता और अपूर्णता के आधार पर वर्गीकृत किया है तथा क्रिया के रूप वैविध्य परिवर्तन को काल के आधार पर बाटते हैं तथा क्रिया को पारिभाषित इस प्रकार करते हैं- "जिस विकारी शब्द के प्रयोग से किसी वस्तु के विषय में कुछ विधान करते हैं, उसे क्रिया कहते हैं।"

2- तिवारी, उदयनारायण. भोजपुरी भाषा और साहित्य. पटना. बिहार-राष्ट्रभाषा परिषद.

उदयनारायण तिवारी ने भोजपुरी भाषा के नामकरण, उसकी बोलियों, क्षेत्र विस्तार, संस्कृति आदि को विस्तार से बताया है। इसमें उन्होंने भोजपुरी भाषा की मूल क्रियारूप की निर्माण प्रक्रिया के अंतर्गत धातु रूप पर चर्चा किया है।

3- तिवारी, शकुंतला. (2008). भोजपुरी की रुपग्रामिक संरचना. कानपुर. विकास प्रकाशन.

शकुंतला तिवारी ने क्रिया रूप वैविध्य पर बात करते हुए क्रियारूप-रचना के निर्माण प्रक्रिया के अंतर्गत धातु तथा उसके भेद आदि पर चर्चा की है। और क्रिया के रूप में परिवर्तन को लिंग, वचन, काल आदि के आधार पर बाटती हैं।

4- दीमशित्स, जाल्मन. (1983). हिंदी व्याकरण. मास्को. रादुगो प्रकाशन.

इस पुस्तक में क्रिया को पारिभाषित करते हैं कि "क्रिया वह शब्द-भेद है, जो वस्तु के व्यापार या उसकी अवस्था को प्रक्रिया के रूप में व्यक्त करता है।" क्रिया के बारे महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किया है।

5- सिंह, शुकदेव. (2009). भोजपुरी और हिंदी. वाराणसी. विश्वविद्यालय प्रकाशन.

प्रस्तुत पुस्तक में क्रिया रूप पर बात करते हुए धातु को दो वर्गों में विभाजित किया है 'मूल' और 'यौगिक' तथा इनके अंतर्गत क्रिया के रुप वैविध्य आदि पर बात किया है।

6- त्रिपाठी, रामदेव आचार्य. (1987). भोजपुरी व्याकरण. कानपुर. विकास प्रकाशन 311सी, विश्व बर्रा.

इस पुस्तक में भोजपुरी के धातु वर्ग तथा उनसे बनने वाले क्रिया रूप निर्माण के बारे में बात की गई है।

इनके अतिरिक्त अन्य पुस्तकों की भी सहायता सहायक सामग्री के रूप में ली गई है।